अरस्तू (३८४ ई. पू. - ३२२ ई. पू.)

अरस्तू यूरोपीय काव्य-चिन्तन के मेरुदण्ड हैं। अरस्तू का यूनानी नाम अरिस्तोतेलेस है। इनके पिता मकदूनिया के राजदरबार में चिकित्सक थे। इनका जन्म ई. पू. ३८४ में हुआ था। प्लेटो ने एथेन्स में ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा के लिए अकादमी की स्थापना की थी। ३६८ ई. पू. में अरस्तू इसी अकादमी में उच्चस्तरीय शिक्षा प्राप्ति के लिए प्रविष्ट हुए। वे एक अत्यन्त मेधावी छात्र थे। उन्हें विश्वास था कि प्लेटो के बाद वे ही अकादमी के आचार्य होंगे किन्तु ऐसा नहीं हुआ। ३४७ ई. पू. में प्लेटो की मृत्यु के बाद उन्हें एथेन्स छोड़ना पड़ा। ३४८ ई. पू. में अरस्तू को मकदूनिया के राजकुमार इतिहास-प्रसिद्ध सिकन्दर का शिक्षक नियुक्त किया गया। सिकन्दर के पिता फिलिप ने अनुसंधान-कार्य के लिए अरस्तू को प्रभूत धनराशि प्रदान की। ३३५ ई. पू. में अरस्तू ने एथेन्स के समीप 'अपोलो' में अपना एक निजी विद्यापीठ 'लीसियस' नाम से स्थापित किया। ३२३ ई. पू. में सिकन्दर की मृत्यु हुई। एथेन्स के नागरिक अरस्तू से असन्तुष्ट थे। कारण था उनका स्वतंत्र चिन्तन। सिकन्दर के कृपापात्र होने के कारण भी एथेन्स के लोग उनसे नाराज थे। विवश होकर वे ३२३ ई. पू. में अपनी जन्मभूमि (स्तगिरा के समीप स्थित खलकिस नगर) लौट आए। यहीं ६२ वर्ष की अवस्था में ई. पू. ३२२ में अरस्तू की मृत्यु हो गई। अपने जीवन-काल में अरस्तू ने तर्कशास्त्र, मनोविज्ञान, तत्त्वमीमांसा, भौतिकशास्त्र, ज्योतिर्विज्ञान, राजनीतिशास्त्र, आचारशास्त्र तथा साहित्यशास्त्र जैसे विषयों पर लगभग ४०० ग्रंथों की रचना की।

अरस्तू का काव्यशास्त्र-विषयक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'पेरिपोइएतिकेस' है। इसी को अंग्रेजी में 'ऑनपोएटिक्स' कहा जाता है। यह एक छोटी-सी पुस्तक है। इसमें छोटे-छोटे छब्बीस अध्याय हैं। कुछ अध्याय तो मात्र एक पृष्ठ के हैं। लगता है यह पुस्तक अरस्तू ने अध्यापन के लिए नोट्स के रूप में तैयार की थी। इसमें अरस्तू ने काव्य की उत्पत्ति, काव्य की प्रकृति, काव्य का सत्य, काव्य के भेद और काव्य का प्रयोजन इन सभी विषयों पर विचार किया है।